International Journal of Education and Science Research Review
ISSN 2348-6457
Volume-1, Issue-5
October- 2014
www.ijesrr.org
Email- editor@ijesrr.org

माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव

Km Mamta Rani
Research Scholar
Sai Nath University
Ranchi

Verma Poonam Ambica Prasad
M.A.
Subharti University
Meerut

Kamna Chauhan
Research Scholar
Sai Nath University
Ranchi

प्रस्तावना

परिवार छात्र की प्रथम पाठशाला है। परिवार का वातावरण माता–पिता के आपसी सम्बन्ध व बच्चों से उनके व्यवहारों का बच्चे के व्यक्तित्व व शैक्षिक उपलब्धियों पर सीधा प्रभाव पड़ताहै। इस दिशा में किए गए विभिन्न शोध कार्यों से उपर्युक्त मान्यता एक तथ्य के रुप में स्थापित हे कि घर में अभिभावक बच्चे को जिस प्रकार के वातावरण में रखेंगे, बच्चों का व्यक्तित्व उससे प्रभावित होता है। जिसका प्रभाव उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर भी अवश्य पड़ता है।

प्रसिद्ध पय्रावरण वादी लुक (1935) "बालक की समझ पर्यावरण के प्रति उसकी प्रतिक्रियाओं का फल है। कोशिकीय जीव से मानव तक प्रत्येक जीवित प्राणी के जीवन की प्रभुत्वशाली विशेषता उसका वातावरण से निरन्तर हैं माता–पिता अध्यापक एंव सहपाठियों से अन्तर क्रियायें विद्यार्थी जीवन का प्रमुख भाग है।"

भारतीय संस्कृति की गतिशीलता ने परिवार के प्रतिमानों में अनेक महत्त्वपूर्ण परिवर्तन किए है। पिता पुत्र सम्बन्ध, स्त्री पुरुषों में तो परिवर्तन हुए ही है साथ ही स्त्रियों और पुरुषों की आर्थिक, सामाजिक स्थिति में भी परिवर्तन आए है। परिवार का आकार दिन प्रतिदिन छोटा होता जा रहा है। गाँवों की अपेक्षा के परिवार अधिक छोटे होते जा रहे है। इसके साथ ही पिछले पचास वर्षों की अपेक्षा अब रिश्तेदारों के आपसी सम्बन्ध भी दुर्बल होते जा रहे है। बालकों के लिए भी, अभिभावक या अन्य परिवार के सदस्यों के पास समय नहीं रहा है।

शब्दों का परिभाषीकरण–

अध्ययन के क्षेत्र व स्वरूप को स्पष्ट रूप से समझने हेतु शीर्षक के प्रयोग बिन्दुओं को निम्न प्रकार परिभाषित किया गया है।

परिवार (Family)

According to Family Climate Scale

Family plays a very significant role in the role in the all round development of a child Parent-Child interaction and parents way to deal with their children, develop certain attitudes a month children their home environment.

मैकाइवर तथा पेज के अनुसार

''परिवार एक ऐसा समूह है जिसमें स्त्री और पुरूष यौन सम्बन्ध पर्याप्त निश्चित होता है और जो बच्चों को पैदा करने तथा उनके लालन पालन की व्यवस्था करता हैं।''

डा0 मजूमदार के अनुसार–

''परिवार ऐसे व्यक्तियों का समूह है जो एक साथ रहते हे और जिनमें रक्त सम्बन्ध होता है और जो स्थान स्वार्थ पारस्परिक कर्त्तव्य भावना के आधार पर समान होने की चेतना या भावना रखते हैं।''

वातावरण ;Climate)

According to Family Climate Scale

The word 'Climate' is a more comprehensive one. It includes within itself the world 'environment'. The human elements around the child is called 'environment'. It embraces the social, physical and emotional activities of the family. All their combined together constitute the 'Family climate'.

डगलस एवं हालैण्ड के अनुसार–

वातावरण वह शब्द है जो समस्त बाह्य शक्तियों, प्रभावों व परिस्थितियों का सामूहिक रूप से वर्णन करता है। जो जीवधारी के जीवन स्वभाव, व्यवहार अभिवृद्धि विकास तथा प्रौढ़ता पर प्रकाश डालता है।

पारिवारिक वातावरण

पारिवारिक वातावरण के अन्तर्गत सारे घर का वातावरण आता है इसके अन्तर्गत माता पिता के आपसी सम्बन्ध माता पिता व बच्चों के बीच आपसी सम्बन्ध पूरे परिवार के सदस्यों के बीच तनावपूर्ण अथवा सौहार्दपूर्ण व्यवहार, परिवार का व्यावसायिक वातावरण आदि जैसे फौजी, व्यापार अथवा शिक्षक होना आदि बहुत से कारक आते हें।

छात्रों की उपलब्धि उनके वातावरण से प्रभावित होती है। पारिवारिक शब्द का अर्थ माता पति तथा बच्चे के मध्यस्थ आन्तरिक व्यक्तिगत सम्बन्ध से है। इसके अन्तर्गत माता पिता का बच्चे के प्रति स्वीकृति या प्रति अस्वीकृति पितृवत प्यार, पारिवारिक अनुशासन बच्चे को प्रदत्त स्वतन्त्रता एवं अधिकार, पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक स्तर माता–पिता का शैक्षिक दृष्टिकोण बच्चे से उनकी आशायें, परिवार तथा पारिवारिक विस्तार के पक्षपात आदि समाहित है इसके बहुत से कारक हो सकते हैं।

1. माता पिता का अशिक्षित होना।
2. माता पिता का अपने बच्चे की पढ़ाई पर किंचित भी रूचि न लेना।
3. आर्थिक अभाव का होना।

शैक्षिक उपलब्धियाँ

शैक्षिक सफलता किसी विशेष अथवा विषयों के समूह के ज्ञान, समझ, अवबोध अथवा दक्षता की माप प्रदर्षित करती है।

वर्तमान अध्ययन के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धिको उनके द्वारा पूर्व कक्षा की वार्षिक परीक्षा में प्राप्तांक के योग के आधार पर आँका जाता है अर्थात विभिन्न अंकन प्रक्रिया से युक्त विभिन्न स्कूलों से आने वाले छात्रों की समरूपता स्थिर करने हेतु उनके द्वारा प्राप्तांकों का प्रतिशत ही अध्ययन में समाहित किया गया है।

सामान्य शब्दों में विभिन्न शिक्षा संस्थाओं द्वारा निर्देशित पाठ्यक्रमों का अध्ययन कर उसके तथ्यों को ग्रहण करने की निपुणता का योग्यता के रूप में हम शैक्षिक उपलब्धि मापने के लिए ही किया जाता हैऔर इसी के आधार पर बालकों को अग्रिम कक्षा में प्रवेश देने का निश्चय किया जाता है।

शैक्षिक उपलब्धि को दो भागों में बांटा गया है उच्च शैक्षिक उपलब्धि और निम्न शैक्षिक उपलब्धि, स्थानाभाव के कारण इसे उच्च उपलब्धि व निम्न उपलब्धि भी लिख दिया गया है।

माता–पिता तथा संरक्षक–

अंत में निष्कर्ष को ध्यान में रखते हुए अन्वेषक ने माता–पिता संरक्षक की शैक्षिक कार्यो की सफलता के लिए निम्नलिखित सुझाव दिये–

1. माता पिता को बच्चों के शैक्षिक क्रियाकलापों के अनुसार उसमें रूचि लेनी चाहिए।
2. माता पिता को बच्चों को उपहार देकर उनको उत्साहित करना चाहिए और उनके साथ अंदर उच्च शिक्षा के प्रति जागृति उत्पन्न करना चाहिए।
3. माता पिता को बच्चो के लिए उचित वातावरण को उत्पन्न करना चाहिए। जो उनको अच्छे काम करने के लिए प्रेरित करें।
4. माता पिता के द्वारा बच्चों में अच्छे अध्ययन की आदतों को उत्पन्न करना चाहिए।
5. माता पिता को यदा कदा विद्यालय जाना चाहिए और अपने बच्चों के अध्यापकों से बच्चे कार्य व समस्याओं के विषय में बातचीत करनी चाहिए।
6. माता पिता को सामाजिक दृष्टिकोण व बच्चों के सामूहिक भावना को जागृत करना चाहिए।
7. बचपन से ही बच्चों में शिक्षा के प्रति उचित व मित्रतापूर्ण दृष्टिकोण को विकसित करना चाहिए।
8. माता पिता को अपने प्रयुक्त भाषा पर विशेष ध्यान देना चाहिए क्योंकि बच्चा भाषा प्रयोग माता पिता से ही सीखता है।
9. बाल्यावस्था में माता पिता को बच्चों को आश्यकीय सहानुभूति प्रदान करनी चाहिए।
10. बच्चो को दण्ड नहीं देना चाहिए, बल्कि उन्हें गलती को एहसास प्यार से समझाकर करना चाहिए।

निष्कर्ष एवं सुझाव–

1. पारिवारिक वातावरण मापनी के आयामों की स्वतंत्रता विरूद्ध नियंत्रण, ध्यान देना विरूद्ध, पक्षपात, खुला संचार विरूद्ध नियंत्रण उत्साह विरूद्ध उदासीनता विमा के सार्थक अंतर नहीं पाया गया अतः यह निष्कर्ष प्रतिपादित किया जा सकता है कि जिन विद्यार्थियों विमाओं में सार्थक अंतर पाया गया है वह उनकर उपलब्धि को प्रभावित करती है। अध्ययन ने प्रदर्शित किया कि समाान्यतः उच्च उपलब्धि वाले विद्यार्थियों के माता पिता निम्न उपलब्धि वाले विद्यार्थियों के माता–पिता की अपेक्षा अपने बच्चों के प्रति और अधिक विनम्र अधिक विश्वास व्यवहार में अधिक उत्साही और अधिक आशावादी थे।
2. पारिवारिक वातावरण मापनी के आयामों में प्रधानता विरूद्ध आज्ञानुकूलता, स्वीकृति विरूद्ध अस्वीकृति, विश्वास विरूद्ध अविश्वास, प्यार विरूद्ध त्याग, अपेक्षा विरूद्ध उपेक्षा, उत्साह विरूद्ध उदासीनता, न्याय विरूद्ध पक्षपात विमा में सार्थक अंतर पाया गया अतः यह निष्कर्ष प्रतिपादित किया जा सकता है कि जिन विमाओं में सार्थक अंतर पाया गया है। वह छात्रों की उपलब्धि को प्रभावित करती है। अध्ययन ने प्रदर्शित किया कि सामान्यतः उच्च उपलब्धि वाले छात्राओं के

माता–पिता निम्न उपलब्धि वाले छात्रो के माता7पिता की अपेक्षा अपने बच्चों से अपने सम्बन्ध और अधिक विनम्र अधिक उत्साही और अधिक औचित्यपूर्ण थे।

3. पारिवारिक वातावरण मापनी के आयामों की स्वतंत्र विरूद्ध नियंत्रण, प्रधानता विरूद्ध आज्ञानुकूलता, स्वीकृति विरूद्ध अस्वीकृति, विश्वास विरूद्ध त्याग, अपेक्षा विरूद्ध उपेक्षा, उत्साह विरूद्ध अपेक्षा, उत्साह विरूद्ध उदासीनता, न्याय विरूद्ध पक्षपात, विमा में सार्थक अंतर पाया गया है। वह छात्राओं की उपलब्धि को प्रभावित करती है। अध्ययन से प्रदर्शित किया जा सकता है कि सामान्यतः उच्च उपलब्धि वाली छात्राओं के माता पिता उनकी ओर अधिक ध्यान और सम्बन्धो के प्रति उत्साहीपन दिखाने और उनसे अधिक वास्तविक अपेक्षा चाह रखते हैं।
4. अध्ययन के निष्कर्ष से पारिवारिक वातावरण तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सकारात्मक सम्बन्ध का भी ज्ञान हुआ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1 धम्मपद : भिक्षु धर्मरक्षित, मोतीलाल बनारसीदास दिल्ली 2002
2 जातक अट्ठकथा :भिक्षु, धर्मरक्षित, भारतीय ज्ञानपीठ, दुर्गाकण्ड, वाराणसी, 1951
3 विनयपिटक :राहुल सांकृत्यायन, सारनाथ 1935
4 खुद्दक निकाय :भिक्षु जगदीश कश्यप, महाबोधि सभा सारनाथ, 1959
5 ललित विस्तर :पी0 एल0 बैद्य, मिथिला, दरभंगा, 1958
6 मेघंकर सावंगी :बोधिसत्व सिद्धान्त, बहुभूमि प्रकाशन नागपुर, 1992
7 अम्बेडकर,बी0आर0 :भारत में जाति प्रथा उन्मूलन समाज–कल्याण मन्त्रालय, भारत सरकार, दिल्ली 1993
8 उपाध्याय भरत सिंह बुद्धकालीन भारतीय भूगोल, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, 1961
9 उपाध्याय, बलदेव :वैदिक साहित्य और संस्कृति, शारदा मन्दिर वाराणसी, 1983
10 दासगुप्त, एस0एन0 :भारतीय दर्शन का इतिहास, राजस्थान–हिन्दी अकादमी, जयपुर, 1978
11 गोयल, एस0आर0 :हिस्ट्री आफ इंडियन बुद्धिस्म, कुसुमांजली, मेरठ, 1987।
12 नेहरू, जवाहरलाल :दि डिस्कवरी आफ इण्डिया, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, दिल्ली, 1984
13 मजूमदार, अर0सी0 एसिएंट इण्डिया, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 1991।
14 सिंह, रघुनाथ :बुद्ध कथा हिन्दी प्रचार संस्थान, वाराणसी, 1968।
15 राधाकृष्णन, एस0 :धर्म और समाज, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली।
16 साकृत्यायन, राहुल :बौद्ध दर्शन, किताब महल, इलाहाबाद, 2004।
17 दनकर, रामधारी सिंह संस्कृति के चार अध्याय, लोकभारती प्रकाशन, 2002।
18 धर्मकीर्ति :बुद्ध का समाज दर्शन, सम्यक प्रकाशन, नई दिल्ली 2005।
19 चंचरीक, कन्हैयाला :भगवान गौतम बुद्ध, जीवन और दर्शन, युनिवर्सिटी पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
20 सुखिया एस0पी0 :शिक्षा दर्शन, विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा
21 चन्द, दिनेश :भारतीय शिक्षा की आधुनिक समस्यायें, जयपुर।
22 राय पारसनाथ :अनुसंधान परिचय, अग्रवाल प्रकाशन आगरा।
23 शर्मा, आर0ए0 :शिक्षा अनुसंधान, आर0 लाल बुक डिपो मेरठ।